वो बच्चे हैं उन्हें बात करने दो

राजाबाबू ठाकुर

अक्सर शिक्षकों द्वारा संसाधनों की कमी एक बहुत बड़ी समस्या के रूप में देखी जाती है। कई शिक्षक इसके समाधान के रूप में बहुत सारी गतिविधियाँ करते हैं एवं टीएलएम का भी निर्माण करते हैं और अपने स्कूल के बच्चों के साथ उनके आधार पर काम भी करते हैं। इस तरह की गतिविधियाँ करने से उनका सीखना आसान और बेहतर बनता है। लेकिन ऐसे उदाहरण बहुत कम निकलकर आएँगे और जब हम शिक्षकों के समक्ष इस तरह के प्रयास करने की बात रखते हैं तो जवाब मिलता है कि "इस तरह के काम के लिए समय की माँग काफी रहती है और हमें पाठ्यक्रम भी पूरा कराना होता है।"

चलिए, मान लेते हैं कि यह सही है, लेकिन जब हम उनसे 'बच्चों से बातचीत' करने की बात करते हैं तब भी वे यह कहने से नहीं कतराते कि "अरे सर! अगर बच्चों को बात करने

का मौका दे देंगे तो वे सिर्फ बातें ही करेंगे, हमारे सिर पर बैठ जाएँगे। बच्चे तो कोरे कागज़ जैसे होते हैं, वे वही सीखेंगे जो हम उन्हें सिखाएँगे।" इस तरह के बहुतेरे जवाब मिलते हैं। हाँलाकि, बच्चों से बातचीत करने में न कोई अतिरिक्त खर्च लगता है और न ही अलग से समय देना पड़ता है।

कृष्ण कुमार जी भी अपनी पुस्तक *बच्चे की भाषा और अध्यापक* में लिखते हैं कि "ऐसे अध्यापक जो बच्चों को बात नहीं करने देते, वे किताबों व अन्य सामग्री के लिए पैसों की कमी की शिकायत करने के हकदार नहीं हैं। वे पहले ही एक मूल्यवान साधन खो रहे हैं जिसके लिए रुपयों की कोई ज़रूरत नहीं है।"

हमारे शिक्षक, यहाँ तक कि हम बड़े भी बच्चों के साथ या बच्चों के बीच की बातचीत को कुछ इसी नज़रिए से देखते हैं। बातचीत बच्चों में बहुत-से कौशलों को विकसित करने का बहुत ही अच्छा माध्यम होती है। केवल इसके माध्यम से बच्चों में अभिव्यक्ति का कौशल, तार्किक कौशल, बारीकी-से अवलोकन करने का कौशल, और भी न जाने कितने कौशल हम विकसित करवा सकते हैं। इस सन्दर्भ में मैं एक बच्चे के साथ बातचीत का उदाहरण यहाँ साझा कर रहा हूँ।

मैंने एक बार इस विषय पर एक शिक्षिका से बात की कि हम अपनी कक्षा में शिक्षण की शुरुआत बच्चों से बातचीत के माध्यम से करते हैं, जिससे बच्चों का आपके साथ जुड़ाव बनेगा और स्कूल के साथ जुड़ाव बनेगा। बच्चों को अच्छा लगेगा कि उनकी बातों को भी यहाँ सुना जाता है। साथ ही, हम जान पाएँगे कि हमारे बच्चों को क्या-क्या जानकारी है और उस जानकारी का उपयोग हम कक्षा में कैसे कर सकते हैं एवं कैसे उस जानकारी को और समृद्ध कर सकते हैं। इतनी सब बातचीत के पश्चात् शिक्षिका बोलीं, "सर, इन बच्चों से क्या ही बात करेंगे।" तब मैंने शिक्षिका की अनुमति लेकर पास बैठे हुए बच्चों में से पहली कक्षा के एक बच्चे सूरज से बातचीत की। सूरज उस दिन पहली बार स्कूल आया था और शिक्षिका ने उसे वर्णमाला लिखने को दी थी। मैंने बात करने के लिए सूरज को इसलिए चुना क्योंकि शिक्षिका का ऐसा कहना था कि वह कभी स्कूल नहीं आता।

सूरज के साथ बातचीत

मैं: आपका नाम क्या है?

सूरज: सूरज।

मैं: आज आपने सुबह से उठकर क्या-क्या किया?

सूरज ने इस सवाल का कोई जवाब नहीं दिया, पेन से खेलता रहा। शायद डरा हुआ था, या मेरी भाषा को समझ नहीं पा रहा था। इसलिए मैंने उसी की भाषा, बुन्देलखण्डी में कोशिश करने की सोची।

मैं: आज सुबेरे से उठके तुमने का-का करो?

सूरज: हम उठे फिर हमने मों धोओ, चाय पी और फिर हमने रोटी खाई।

मैं: सब्जी का बनी ती?

सूरज: आलू।

मैं: अच्छा! जे आलू कहाँ से आत हैं?

सूरज: पापा लेआत हैं बजार से।

मैं: और बजार में कहाँ से आत?

सूरज: इतइं से जात है, गाँव से।

मैं: तो फिर गाँव में कहाँ से आत हैं?

उसने दो बार अपनी बात दोहराई, 'शहर से गाँव में, गाँव से शहर में'। शायद वो मेरे प्रश्न को समझ नहीं पा रहा था। तब मैंने कुछ इस प्रकार पूछा...

मैं: मतलब गाँव में किते से आत हैं?

सूरज: उंगत हैं ज़मीन में उते।

मैं: अच्छा! जमीन में किते, ऊपर उंगत हैं कि नेंचे?

सूरज: उतई उंगत हैं जमीन में।

(शायद सूरज फिर से समझ नहीं पाया)

मैं: पेड़ जैसे उंगत कि जे बेल जैसे?

इमली के पेड़ व वहीं लगी एक बेल की ओर इशारा करते हुए पूछा...

सूरज: नईं, ऐसो नईं उंगत। ब ककरी जैसो लगत है।

(यहाँ मुझे लगा कि या तो वह मेरी बात को समझ नहीं पाया था या फिर उसके पास अपनी बात को रखने के लिए शब्द नहीं थे, तब मैंने अन्य तरीके से जानने का प्रयास किया।)

मैं: अच्छा, जा बेल काये की है?

सूरज: कदुआ की।

(तभी एक छोटी-सी बच्ची कहती है...)

बच्ची: नईं सर, तोरई की है।

मैं: अच्छा, जा तोरई की है। तो ककरी की बेल भी है का इते?

बच्ची: (इशारे से) है, बा है।

मैं: अच्छा, जा बेल ककड़ी की है, कैसे जाना?

सूरज: फूल से।

मैं: सूरज, का तुमे भी लगत है कि जा बेल ककरी की है?

सूरज: हाँ।

मैं: तो अब बताओ, आलू जमीन के भीतर उंगत के ऊपर?

वह इस बार भी नहीं समझा। तब मैंने पूछा...

आलू प्याज जैसो लगत के ककरी जैसो?

सूरज: प्याज जैसो।

(मुझे समझ आया कि कई बार हमें बच्चों से एक ही बार में प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता। ऐसे में उन्हें विभिन्न प्रकार से उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

मैं: तुमने आलू-प्याज के पौधे देखे हैं?

सूरज: हाँ, सर उते लगे ते।

मैं: आलू-प्याज जैसे और का का लगत है?

सूरज: लेसन बी लगत है।

मैं: अच्छा, अदरक देखा है, बो कैसे लगत?

सूरज: ऐसइ।

मैं: अभी तुम कै रये ते, तुमने चाय पी हती सुबेरे। चाय कैसे बनत है?

सूरज: शक्कर पत्ती डार दो और बन जात।

मैं: अच्छा, जा शक्कर किते से आत है?

सूरज: बजार से।

मैं: और बजार में किते से आत?

सूरज: उते के दूकानदार दूसरे बजार से लेआत हैं।

मैं: दूसरे बजार में किते से आत हुइए?

सूरज: बनत है।

मैं: कैसे बनत है?

सूरज: गन्ना की बनत है।

मैं: अरे बा यार सूरज, तुमे तो सब पतो है। अच्छा, गन्ना को और का बनत? (सूरज कुछ नहीं बोला)

मैं: गुड़ बी तो बनत है और गन्ना को रस हम पियत भी तो हैं। अच्छा, गन्ने को रस हम कबे पियत हैं?

सूरज: गर्मियों में पियत हैं।

मैं: अच्छा, अबे काये नई पियत? अबे बी तो पी सकत हैं।

सूरज: अबे गन्ना होतई नइये। बे तो जबै होत हैं, सो जबई पियत हैं।

(इतनी बात करके सूरज ने कहा कि "अब हमें भूख लगी है, हमें घर जाना है," और शिक्षिका की अनुमति से वह घर चला गया।)

और इस प्रकार मेरी बात खत्म हुई। मैंने सूरज से आगे भी इसी तरह की बातचीत करने का कहकर जाने दिया। इसके बाद मैंने शिक्षिका से बात जारी रखी, "देखिए मैडम, हम लोग सोचते हैं कि बच्चों को अभी कुछ नहीं पता होगा पर उसे कितना कुछ पता है। जब उसकी इन जानकारियों को हम अपनी कक्षा का हिस्सा बनाएँगे तो न केवल बच्चा स्कूल से जुड़ाव बना पाएगा बल्कि शिक्षक के साथ भी अच्छे सम्बन्ध बनेंगे और जो समस्या है, बच्चे के स्कूल न आने की, वह भी शायद नहीं रहेगी। एन.सी.एफ. व लर्निंग आउटकम भी तो शुरुआत में इसी तरह से काम करने का कहते हैं और इससे शिक्षक का काम भी आसान होगा। अभी देखिए, ये बच्चा कितना खुश है।" अब शिक्षिका ने भी इस पर सहमति दी और बच्चों को बात करने देने का और बच्चों से बातचीत करने का वादा भी किया।

बात जारी रखते हुए मैंने शिक्षिका से कहा, "इस प्रकार बातचीत के माध्यम से काम करते हुए आपको अपनी कक्षा के लिए भी बहुत-सी जानकारियाँ मिलेंगी जिनका इस्तेमाल आप बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने में भी कर सकती हैं।" इस पर शिक्षिका ने खुशी-खुशी हामी भरी और बाद में बच्चों के साथ कविता, कहानी, चित्र आदि पर बातचीत को अपनी कक्षा प्रक्रियाओं का हिस्सा बनाया।

सभी विषयों के पहले और बाद में बात करने से बच्चों की उस विषय पर समझ भी बनती है, साथ ही, वे पढ़ी जा रही विषयवस्तु से जुड़ाव भी बना पाते हैं। इसी प्रकार कुछ और बच्चों की बातचीत को भी हम यहाँ देख सकते हैं जिससे बच्चों की विद्यालय-पूर्व समझ को जानने में और मदद मिलेगी।

पुष्पेन्द्र के साथ बातचीत

एक अन्य स्कूल की बातचीत मैं यहाँ रखना चाहूँगा। एक दिन मैं कक्षा-2 में एक चित्र पर बातचीत कर रहा था। चित्र एनसीईआरटी की किताब से था जिसमें दो व्यक्ति, तीन बच्चे और एक पेड़ बना हुआ था।

उसपर कुछ इस प्रकार बातचीत हुई...

मैं: चित्र में दिखाई देने वाले व्यक्ति कौन हो सकत हैं?

पुष्पेन्द्र: (व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए) यह किसान है। (उसने अपने तर्क भी दिए) उनने कपड़े ऐसे पहने हैं और बो खेत में काम कर रये हैं।

मैं: किसान का काम करत हैं?

पुष्पेन्द्र: फसल उगात हैं और उसकी रखवाली करत हैं।

मैं: कौन-कौन-सी फसल उगात हैं?

पुष्पेन्द्र:- पिसी (गेहूँ), चना, मसूर, सोयाबीन और पेड़ भी लगात हैं।

मैं: फसल कब और कैसे बोई जात है और ए दौरान का-का होत है?

पुष्पेन्द्र: अबै तो पिसी और चना लगे हैं जो ठण्ड में बोए जात हैं। जिनके लाने सबसे पहले ट्रेक्टर से पंजा लगात हैं, फिर बोनी करत हैं, फिर पानी देत हैं, फिर कछु दिन में काट लेत हैं।

मैं: पानी कितनो देत हैं?

पुष्पेन्द्र: पिसी में दो-तीन बेर देत हैं, मनो चनों में एकई बेर देत हैं।

मैं: पिसी में जादा पानी काय देत हैं जबकि चनों में कम।

पुष्पेन्द्र: बस, देने पड़त है।

इस पर मैंने उसे घर से पूछकर आने को कहा।

मैं: सोयाबीन कबे लगत है?

पुष्पेन्द्र: सोयाबीन तो बारिस में लगत है।

मैं: का हुइये, अगर हम सोयाबीन को अबै लगा दें?

(पुष्पेन्द्र इस सवाल का जवाब नहीं दे सका।)

तब मैंने उसे फसलों के विशेष मौसम के बारे में, सेब हमारे यहाँ क्यों नहीं होते आदि के बारे में उदाहरण देते हुए समझाया और इस प्रकार हमारी बातचीत समाप्त हुई। इसके बाद शिक्षिका व मैंने मिलकर बातचीत में आए कुछ शब्दों की पहचान कराई, शब्द-पहचान के बाद उन्हीं में से एक शब्द चुनकर उससे अक्षर-पहचान कराई। अक्षर-पहचान के बाद अक्षर से शुरू होने वाले शब्दों का जाल बनाया और उन शब्दों की पहचान पर कार्य किया। इस तरह हमने बच्चों के साथ पढ़ने-लिखने पर काम किया जिसका प्रभाव भी बच्चों में जल्दी ही देखने को मिला।

हम न बताएँ लेकिन वे जानते हैं

अगर हम इन दोनों ही बच्चों के द्वारा बताई गई बातों का विश्लेषण करें, तो बहुत ही स्पष्टता से समझ आता है कि हमें बच्चों की बातचीत या बच्चों के साथ बातचीत के सन्दर्भ में हमारी सोच को बदलने की ज़रूरत है। कैसे एक बच्चा जिसने अभी स्कूल का मुँह तक नहीं देखा, न केवल

विभिन्न प्रकार के फलों, सब्ज़ियों व अनाज की खेती के बारे में जानता है बल्कि उसे मार्केट के बारे में भी पता है कि तमाम प्रकार की चीज़ें कहाँ से, कितने लोगों के माध्यम से एक ग्राहक तक पहुँचती हैं। इसके साथ ही उसे यह भी पता है कि गन्ने से शक्कर जैसे उत्पाद कैसे बनते हैं। दूसरा बच्चा भी बिना पढ़े खेती के बारे में इतनी सारी जानकारी रखता है। बच्चे को यह पता था कि किस मौसम में कौन-सी फसल बोई जाती है, वह कैसे बोई जाती है, किस फसल को कम पानी की ज़रूरत होती है और किस फसल को ज़्यादा।

अगर हम इसी प्रकार सभी बच्चों से बातचीत करें तो न जाने कितनी जानकारी निकलकर सामने आएँगी और इन जानकारियों का उपयोग हम पढ़ने-लिखने में कर रहे होंगे। इस तरह की बातचीत एक अच्छा संसाधन तो है ही, साथ ही, यह स्कूल से जुड़ी बहुत सारी समस्याओं को भी हल कर रही होगी - बच्चों का स्कूल से डरना, स्कूल से भागना और बीच में ही स्कूल छोड़ देना; वह भी बिना किसी प्रकार के अतिरिक्त वित्तीय खर्च और समय के। लेकिन हम इस बहुमूल्य संसाधन का कभी उपयोग ही नहीं करते क्योंकि हमें लगता है कि बच्चे तो कोरे कागज़ होते हैं, उन्हें तब तक कुछ आ ही नहीं सकता जब तक हम उन्हें नहीं सिखाएँगे।

आम तौर पर धारणा यह होती है कि बच्चे उतना ही जानेंगे जितना हमने उन्हें सिखाया है। तो उनसे बात

करके क्यों अपना समय बर्बाद किया जाए जबकि इस समय का सदुपयोग करके हम अपना पाठ्यक्रम पूरा करा सकते हैं। लेकिन यदि हम पाठ्यक्रम के अध्यायों को ही ध्यान से देखें, तो क्या हमारे पाठ भी बच्चों से बात करने को नहीं कहते? अगर हम कक्षा-1 की पाठ्यपुस्तक के पहले ही अध्याय को देखें, तो उसमें भी फुटनोट में साफ तौर पर लिखा होता है कि अमुक विषय पर बच्चों से बात करें और उनके विचारों को जानें। यही नहीं, अगर हम कक्षा एक से तीन के हिन्दी के सीखने के प्रतिफल देखें, तो पाएँगे कि बहुत सारे सीखने के प्रतिफल बच्चों से बातचीत करने से ही पूरे हो रहे होते हैं। हमें अपने नज़रिए को बदलना होगा क्योंकि यही बातचीत न केवल बच्चों को आप से और स्कूल से जोड़ रही होगी, बल्कि बच्चों को संसार को देखने के नज़रिए दे रही होगी। बच्चों द्वारा अपनी बातों पर दिए तर्क और उनके द्वारा पलटकर पूछे गए सवाल, दोनों कक्षा की शिक्षण प्रक्रिया में बहुमूल्य संसाधन हो सकते हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में एक बात कही गई है जिसे मैं यहाँ रखना महत्वपूर्ण समझता हूँ कि 'सीखना, एक प्रकार से अलग-थलग गतिविधि हो गई है जो बच्चों को जीवन्त तरीके से जीवन से जोड़ने को प्रोत्साहित नहीं करती'। हमें यह प्रयास करना चाहिए कि बच्चे घर और स्कूल को जोड़कर देखें, स्कूल में सीखे हुए का इस्तेमाल घर में और घर के अनुभवों का इस्तेमाल स्कूल में सीखने के लिए करें।

राजाबाबू ठाकुर: एकलव्य, केसला, होशंगाबाद में शिक्षक-शिक्षा के काम में एसोसिएट के रूप में कार्यरत। घूमने और पढ़ने में रुचि।

सभी चित्र: हीरा धुर्वे: चित्रकला में गहरी रुचि। साथ ही, 'विहान ड्रामा वर्क्स' रंगमंच समूह व 'मार्गी बैंड' से जुड़े हुए हैं। भोपाल में रहते हैं।